Hindi

MSS Sangrah (in ~~Devnagri Script~~)

147

a) Bhasha Bhukhan by Raja
Jaswant Singh Rathaur.
b) Sikh Nakh by Kavi Bal Badhar.
c) 24 Avtar's mentioning.
d) Number of soldiers took part
in the battle of Raja Jagat
Singh Pathania of Nurpur with
Shah Jahan in 1700 Bikrami.

Bhasha Bhushan

1407=MS.

॥ॐश्रीगणेशायनमः॥विघ्नहरनतु
महोसदागनपतिहोहुसहाइ॥विन-
तीकरजोरेंकरोंदीजेग्रंथवनाइ॥१॥
जिनकीनोपरपंचसवअपनीइछा
पाइ॥ताकोंहोंवंदनकरोंहाथजोर
सिरनाइ॥२॥करुनाकरिपोषनस-
दासकलअघकेप्रान॥ऐसेईस्वर
कोहियेंरहोरैनदिनध्यान॥३॥मेरे
मनमेतुमरहोयहकैसेकहिजाइ॥
तातैयहमनआपसोलीजेक्योंनल
गाइ॥४॥राजीमनमिलिस्यामसौंभ-
योनगाहरोलाल॥यहअचरनउज्जो
लभयोतजोमेलतिहकाल॥५॥अ
थचतुर्विधिनायक॥एकनारिसोंहित
करैसोअनुकूलवखानि॥वहुनारिन
सोंप्रीतसमदछनताकोजानि॥६॥मी
ठीवातैसठकरैकरिकैमहाविगार॥
आवतलाजनधष्टकोकियेकोटिधिक्कार॥७॥

॥अथ त्रिविधि नाइका॥ स्वकीया प
ति सौं प्रीति कहै परकीया उपपत्ति
वैसि कि नायक कवी सदंगन का सो
हित रत्ति॥८॥ अथ नाइका जाति॥
पद्मिन चित्रन संखिनी अरु हस्त-
नी बषानि॥ त्रिविधि नाइका भेद
मे चारि जाति ये जानि॥९॥ अथ ना
इका भेद॥ स्वकीया व्याही नाइका
परकीया परवाम॥ सो सामान्या ना
इका जाके धन सौं काम॥१०॥ बिनु
जाने अग्यात है जाने जोवन ग्यात॥
मुग्धा के द्वै भेद ए कवि सब वरनत ज्ञा
त॥११॥ मध्या सो जामे दुबो लज्जा
मदन समान॥ अति प्रवीन प्रौढा व
हे जाके पिय मे प्रान॥१२॥ क्रिया व
चन मे चातुरी इहै विदग्धा रीति॥ बहु
त दुराए हू सषी लषी लछिता प्रीति
॥१३॥ गुपता रति गोपनि करै रत्यपून

कुलटा आहि ॥ नि प्रेम जानै पिय
मिलन मुदिता कहिये ताहि ॥ १४
विनसे ठौर सहेट की आगे होइ
न होइ ॥ जाति न ठौर सहेट की मन
से ना है सो इ ॥ १५ ॥ अथ अष्टनाइ
का ॥ प्रोषित पति का विरह नीअ
ति दिसा इ जो होइ ॥ पुनि पाछतात
मन कलहंतरता सोइ ॥ १६ ॥ पति
आवे कहु अनिल वसि प्रात षंडि
ता गेह ॥ जाति मिलन अभिसारै स
ज सिंगार सवदेह ॥ १७ ॥ पिय सहेट
आयो नहीं चिंता मन में आनि ॥ सो
च करे संताप सो उत्कंठिता वषा
नि ॥ १८ ॥ विन पाएं संकेत पिय
विप्रलब्ध तन ताप ॥ वासक सज्जो
तन सजे पिय आगम जिय थाप
॥ १९ ॥ जाके पति आधीन कहि स्वा
धीन पतिका ताहि ॥ भोर सु ने पिय
को गमन प्रवासित पतिका ताहि ॥ २० ॥

रूपप्रेमअभिमानतैं द्विविधिग
र्वताजानि ॥ अनसंभोगीदुषिता
अनतमिलनपियमानि ॥ २१ ॥
गोपकोपधीरा करैप्रगटअधी
राकोप ॥ लछनधीराधीरके को
पप्रगटअरगोप ॥ २१ ॥ अथत्रि
विधिमान ॥ सहजेहांसीषेलतैं
विनैवचनसुनिकानि ॥ पांइपरें
पियकेमिटैलघुमध्यमगरूमा
न ॥ २२ ॥ होइसंजोगसिंगारमेदं
पतिकेतनआइ ॥ चेष्टाजेवहु
भांतिकीतेकहियेदसहाइ ॥ २३ ॥
पियप्यारीरतिसुषकरैलीला
हावसुजानि ॥ वोलिसकेनहि
लाजतैविहृतहावसुवषानि
॥ २४ ॥ चितवनवोलनिचालमें
रसकीरीतिविलास ॥ सोहतअं
गअंगभूषननिललितहावसु
प्रकास ॥ २५ ॥ विछितकोनाहुवेर

मेअभषनअप्रलपसुहाइ॥ रससो
अभबनअलिकेपहरेविभ्रमहा
इ॥२६॥ क्रोधहर्षअभिलाषभ
यकिल्किंचितमैहोइ॥ प्रगटकरे
सुबदुषमैवेहावक्कुट्टमितसो
इ॥२७॥ मोटाइतचोहेदरसवात
नभावेकान॥ आयेआदरनाक
रेधरिविब्बोकगुमान॥२८॥ अथ
दसअवस्था॥ नैनमिलेमनहूं
मिल्यामिलिवेकोअभिलाष॥
चिंताजातननविनमिलेजतनकि
येहूंलाष॥३०॥ सुमरिनरससिंगा
रकोकरिकरिलेतउसास॥ करति
रहतिपियगुनकथनमनउद्वेग
उदास॥३१॥ विनसमभेकछुबकि
उठेकहियेताहिप्रलाप॥ देहघट
तमनमैवढतविरहव्याधिसंता
प॥३२॥ तियमूरतिमूरतिभईहूंज

डतासवगात॥ सोकहियेउन्माद
वससुधिविनुनिसदिनजात ३३
गनिसिंगारअरुहास्यरसकरुणा
रौद्रजियजांनि॥ वीरभैयअरुवि
भत्सकहिअद्भुतसांतवषानि
॥३४॥ रतिहांसीअरुसोकपुनि
क्रोधउछाहअरुभीति॥ निद्रावि
स्मयआठएस्याइभावप्रतीति ३५॥
स्थंभकंपसुरभंगकहिविवरन
आसस्वेद॥ वहुरिपुलकअरुली
नताआठोसात्विकभेद॥३६॥जो
रसकीदीपतिकरैउदीनहैसोइ॥
सोअनुभावजोऊपजैरसकोअ
नभवहोइ॥३७॥आलंवनअव
लंवरसजामेंरहेवनाइ॥ नवहू
रसमेंसंचरैतेविभचारीभाइ॥ ३८
निर्वेदग्लानिसंकागरवचिंतामो
हविषाद॥ दैन्यअसूयास्मृतम

दग्रारस भ्रम उन्माद ॥ ३९ ॥ व्रीडा
जडता हर्ष धृत मति आवेग विषा
नि ॥ स्मृति गोपन चपलता अ
पस्मार भय जानि ॥ ४० ॥ व्याधि वि
वाद वितर्क मति ए तेतीस गना
इ ॥ ४१ ॥ अथ उपमालंकार ॥ इहि वि
धि सब समता मिले सो ई उपमा
जानि ॥ ससि सो उज्जल तिय व
दन पल्लौ से मृदु पानि ॥ ४२ ॥ अ
थ लुप्तोपमालंकार ॥ वाचक
धर्म रु वर्ननी है चौथे उपमान ॥
इक बिन द्वै बिन तीन बिन लु
प्तोपमा प्रमान ॥ ४३ ॥ बिजुरीसि
पंकज मुखी कनक लता इति य
देखि बनता रस सिंगार की आ
रस मूरत पेखि ॥ ४४ ॥ अथ अ
न्योन्यालंकार ॥ उपमेयै उपमा
न जब कहत अन्योन्यो ताहि ॥

उत्कंठा निद्रा स्वपन
बोध उग्रता ॥ ३४

तेरेमुषकीजोरकोंतेरोईमुषग्रा
हि॥४५॥ अथउपमानोपमेयलं
कार॥ उपमालागेपरसपरसो
उपमाउपमेय॥ अंजनहैतुयद्रि
गनसेतद्रिगखंजनसेय॥४६॥ पं
चविधिप्रतीपलंकार॥ जोप्रतीप
उपमेयकोकीजेहेउपमान॥ लो
चनसेअंबुजवनेमुषसोचंद्रव
षान॥४७॥ उपमेकोउपमानतेंप्रा
दरजवैनहोइ॥ गरवकरतमुषको
कहाचंदहनीकेजोइ॥४८॥ अन
आदरउपमेयतेंजवपावैउपमा
न॥ तीछननैनकटाछतेंजिते
कामकेवान॥४९॥ उपमेयको
उपमानजवसमतालायकना
हि॥ अतिउत्तमद्रिगमीनसेकहे
कौनविधिजाहि॥५०॥ व्यर्थहोइ
उपमानजववर्णनीयलषिसा
र॥ द्रिगआगेम्रगकछुनयेपंचार

तीपप्रकार ॥५१॥ अथ द्वितीयरू
पकलंकार ॥ हैरूपक द्वैभांतिको
मिलितरूपअभेद ॥ अधिकन्यू
नसमदुहनके तीन तीनएभेद ॥
॥५२॥ मुषससिवाससिते अधि
कउदितजोतिदिनराति ॥ सागर
ते उपजीनयह कमलाअपरसु
हाति ॥५३॥ नैनकमलएऐनेहे
औरकमलकिहिकाम ॥ गमनक
रतनीकीलगति कनकलतायह
वाम ॥५४॥ अतिसोहतविद्रुम
अधरनहिसमुद्रउत्पन्न ॥ तुअ
मुषपंकजविमलअतिसरससु
वासप्रसन्न ॥५५॥ अथपरिना
मअलंकार ॥ करैक्रियाउपमान
ह्वैवर्ननीयपरिनाम ॥ लोचन
कंजविसालतेदेषतदेषोवाम
॥५६॥ अथउल्लेषालंकार ॥ सोउल्ले

षजुएककोवहुसमुझेवहुरीति॥
अर्थिनसुरतरुतियमदनअरि
कोकालप्रतीति॥५७॥वहुविधि
वर्नैएककोवहुगुनसोंउल्लेष॥
तूरनअर्जुनतेजरविसुरगुरव
चनविसेष॥५८॥स्मरनभ्रमसं
देहलंकार॥सुमिरनभ्रमसंदे
हएलछ्छननामप्रकास॥सुधि
आवतिवावदनकीदेषेसुधा
निवास॥५९॥वदनसुधानिधि
जानिएतुअसंगफिरतचकोर॥
वदनकिधौयहसीतकरकिधौ
कमलभयोभोर॥६०॥अथसुद्धा
पहुतलंकार॥धर्मदुरैआरोपतें
सुद्धापहुतजानि॥उरपरनहीउ
रोजएकनकलतफलमानि॥६१॥
अथहेतुपहुतलंकार॥वस्तुदुरा
येजुक्तिसोंहेतुअपहुतहोइ॥तीव्र

नचंदनरैनरविवडवानलहीजोइ
॥६२॥ अथपर्जस्तापहुतिलंकार॥ पू
जासजोगुनऔरकेऔरविषेआरो
प॥ होइसुधाकरनाहियहवदन
सुधाकरआप॥ ६३॥ भ्रांतापहुतवच
नसोंभ्रमजवपरकोजाइ॥ तापकं
पहैज्वरकहां नासखिमदनसताइ
॥६४॥ छेकापहुतजुक्तिकरिपरसो
वातदुराइ॥ करतअधरछतपीअ
नहीसखीसीतरितुबौइ॥ ६५॥ कैतव
पहुतिएककोमिसकरिवर्नीनआ
न॥ तीछनैनेनकटाछमिसवर्षेन
मनमथबान॥ ६६॥ अथउत्प्रेछाले
उत्प्रेछासंभावनावस्तुहेतफलले
ष॥ नैनमनोअरविंदहैसरसविस
सविसेष॥ ६७॥ चलीमनोंआगन
कठिनतातेरातेपाइ॥ तुअपदसम
ताकोकमलजलसेवतइकभाइ॥
६८॥ अथरूपकातिसयोक्तिलंकार॥

अतिसयोक्तिरूपकजहांकेवलहीउ
पमान॥कनकलतापरचंद्रमाधरै
धनुषद्वैवान॥६९॥अतिनिह्नवगुन
औरकोऔरैपरठहराइ॥सुधानसो
यहतुअवदनचंद्रकहैबौराइ॥७०॥
अतिसयोक्तिभेदकसवैइहिविधि
वरनतजात॥औरैहांसिवोदेखिवो
औरैयाकीवात॥७१॥संवंधातिस
योक्तिजवदेतअजोगहिजोग॥या
पुरकेमंदिरकहैससितेउचेलोग
॥७२॥अतिसयोक्तिदूजीवहैजोगअ
जोगवखान॥तोकरआगेकल्पतरु
क्योपावैसनमान॥७३॥अतिसयो
क्तिअक्रमजवैकारनकारजसंग
तोसरलागतसाथहीधनुषहिअरु
अरिअंग॥७४॥चपलात्युक्तिजुहेतुके
होतनामहीकाज॥कंकनहीभइमु
द्रिकापीयगमनसुनिआज॥७५॥
अत्यंतातिसयोक्तिसोपूर्वापरक्रम
नाहि॥वाननपहुचेअंगलोंअरिपल

मेगिरजाहि ॥ ७६ ॥ तुल्यजोगताती-
नियेलछनक्रमतेजान ॥ एकसब
देमैहितअहितवहुमेएकैवान ॥
॥ ७७ ॥ वहुसोसमताग्रुननिकरि
इहिविधिभिन्नप्रकार ॥ गुरुनि-
धिनीकेदेतलतियकोउरिकोहा
र ॥ ७८ ॥ नवलवधूकीवदनद्युति
अरुसकुचतअरविंद ॥ तूंहीश्रीनि
धिधर्मनिधितूंहीइंदुअरुचंद ७९ ॥
अथदीपकलंकार ॥ सोदीपकनिज
गुननिसोंवर्नीइतरइकभार ॥ गज
मदसोंन्रपतेजसोंसोभालेतवना
इ ॥ ८० ॥ दीपकआवृततीनविधिआवृ
तपदकीहोइ ॥ पुनिहैआवृतअर्थ-
कीदूजेकहियेसोइ ॥ ८१ ॥ पदअरु
अर्थदुहूनकीआवृततीजीलेखि ॥
घनवरषैहेरीसखीनिसिवरषैहै
देखि ॥ ८२ ॥ फूलेछकदंववेकेत
कविकसेआहि ॥ मत्तभयेहैमोरअति
सेचातकमत्तसराहि ॥ ८३ ॥ अथप्र

७ तिवस्तुपमालंकार॥ प्रतिवस्तुपमो-
सोसमुझिकेऊवाक्यसमान॥ सो-
भासूर प्रतापवरसोभासूरहिवा-
न॥ ८४॥ अथ द्रिष्टांतालंकार॥ पूर्व
१ काद्रिष्टांतसोलछन नामपुमान॥
कांतिमानससिहीवन्यो तूंहीकीरत
मांन॥ ८५॥ अथ निदर्सनालंकार॥
कहियेत्रिविधिनिदर्सना वाक्यअ
र्थसमदोइ॥ येककियेपुनिश्रोरसु
नश्रोरवस्तुमेहोइ॥ ८६॥ कहियेका
रजदेषिकछु भलोवुरोफलभाव॥
दातासोम्यसु पूर्नकवि नुप्रनचंद
वनाव॥ ८७॥ देषोसहजेधरतये
षंजनलीलानेन॥ तेजस्वीसोंनि
वलवलमहादेवमुररूमेन॥ ८८॥
अथ व्यतरेकालंकार॥ वितरेकजु
उपमांनतें उपमेअधिकोदेषि मु
षहैपूर्वजसोसषीमीठीवातविसे
षि॥ ८९॥ अथ सहोक्तिलंकार॥ सोस
होक्तिसवसाथहीवरनैरससरसा
इ॥ कीरतअरकुलसंगहीजलनिधि

पहुची जाइ ॥ ९० ॥ अथ विनोक्ति लंकार ॥ है विनोक्ति द्वै भांति की प्र-
स्तुति कछु विनु छीन ॥ अरु सोभा-
अधकी लहै प्रस्तुति कछु इक हीन
॥ ९१ ॥ द्रगखंजन सैं कंजसे अंजन
न विनु सो भैन ॥ वलि सव गुन सर
सात तूं रंच रुखाई है न ॥ ९२ ॥ अथ
समासोक्ति लंकार ॥ समासोक्ति
प्रस्तुति फुरै प्रस्तुति वरनन मांझ ॥
कुमुदिन हूं प्रफुलित भई देखि क
लानिधि सांझ ॥ ९३ ॥ अथ परिकर
लंकार ॥ है परिकर आसै लियै ज
हां विसेखिन होइ ॥ ससिवदनीय
ह नाइ का ता पहि रति है सोइ ॥ ९४ ॥
अथ परांकुर लंकार ॥ साभिप्राय वि
सेख जव परिकर अंकुर नाम ॥ स्रवे
हूं पियके कहै नै कुन मानति वाम
॥ ९५ ॥ अथ प्रस्लेख लंकार ॥ स्लेष

अलंकृत अर्थ वहुरि कस इमै होत होइ न परन ने हविन असो वदन उदोत ९६ ॥ अथ अप्रस्तुति प्रसंसालंकार ॥ अलंकार है भांति के अप्रस्तुति परसंस इक वर्णन प्रस्तुत विनो दूजो प्रस्तुत अंस ९७ धन यह च रचा जाग की सकल सभै सुखदे त विषरा खै है कंठ शिव आप धस्यो इह हेत ॥ ९८ ॥ अथ प्रस्तुतांकुरालंकार ॥ प्रस्तुत अंकुर रहै किये प्रस्तुतमै प्रस्ताइ ॥ कहा गयो अलि केवरे छोडि सकोमल जाइ ॥ ९९ ॥ अथ पर्यायोक्तिलंकार ॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सौ वात ॥ मिस के कारज साधियै जो है चित तहि सु हात १०० ॥ चतुर वहै जिन तो मरै जारी विन गुनमाल ॥ तुम दोउ वैठो वहां जात अन्हावन ताल ॥ १०१ ॥ अथ व्याजस्तुति लंकार ॥ व्याजस्तुत निंदा

नसहिजवैवडाईहोंहि सुरगच
ढायैपति तलै गंग कहा कोतोहि १०२

अथ व्याजनिंदालंकार॥ व्याजनिं-
दानिंदाविषेनिंदाअौरेहोइ सदाषी
नकीनोनतंसंदमंदहैसोइ १०३

अथ आछेपलंकार॥ तीनभांतआ
छेपहैएकनिषेधाभास॥ पहिलेक
हियेआपुकछुवहुरफेरियैतास १०४
दुरेनिषेधजुविधिवचनलछनती-
नोलेषि॥ होंनहिंदूतीअगिनतैंतिय
तनतापविसेषि १०५ सीतविरिनि
देदरसतंअथवातियमुषआहि
जाहुदईभोजनमेंचलेदेसतुम
जाहि॥१०६॥ अथविरोधाभासलंकार॥
भासेजुवैविरोधसोवहैविरोधाभा
स॥ भाजेसबैविरोधसोउतरतहंउत
रतनहींमनतेंप्राननिवास॥१०७॥ अ
थविभावनालंकार॥ होतिछभांति-
विभावनाकारनविनहीकाज॥ विनु
जावकदीनेचरनअरुनलषेहैआज॥१०८॥

६

हेतुअपूरतेंजवेकारजपूरनहोइ॥
कुसमवानकरिगहिमदनसवजे
गजीत्योजोइ॥१०९॥ प्रतिवंधककें
हेतहूंकारजपूरनजांनि॥ निसिदि
नअतिसंगतितउ नैनराग कीषा
नि॥११०॥ जवेअकारनवस्तुतेंका
रनपरगटहोत॥ कोकिलकीवां
नीअवेवोलतसुन्योकपोत॥१११॥
काहूकारनतेंजवेकारजहोइवि
रुध॥ करतमोहिसंतापयहसषी
सीतकरसुध॥११२॥ पुनिजवकार
जतेंकहूंउपजेकारजरूप॥ नैनमी
नतेंदेषियतसरितावहुतअनूप
॥११३॥ अथविसेषोक्तिअलंकार॥
विसेषोक्तिजुहेतसोंकारजउपजे
नाहि॥ नेहघटतनहिहेतउकोन
दीवचितमाहि॥११४॥ अथअसंभव
लंकार॥ कहेअसंभवहोइजववविन
संभावनकाज॥ गिरवरधरिहेंगोप
सुतकोजानतहेआज॥११५॥ अस

असंगतलंकार॥ तीनअसंगतिका
जअरुकारनन्यारेठाम॥ औरैठोरजु
कीजियेऔरठौरकोकाम॥११६॥औ
रकाजआरंभयेऔरैकरियेदोरि॥
कोउलमरमातीनईनूमितअवावै
रि॥११७॥तेरुअरिकीअंगिनातिलक
लगायोपानि॥ मोहिमिटायोनाहि
अमोहलगायोआनि॥११८॥विष
मालंकार॥ विषमअलंकृततीनि
विधिअनमिलवेकोसंग॥ कारणके
रंगऔरकैकुकारजऔरैरंग॥११९॥
औरभलोउद्यमकियेहोतबुरोफल
आइ॥ प्रतिकोमल्लतनतीयकोक
हाकामकीलाइ॥१२०॥बड्डलताअ
तिस्यामतेंउपजीकीरतसेत॥ सषि
लायोधनसारपेअधिकतापतन
देत॥१२१॥प्रथमसमालंकार॥ अलं
कारसमतीनिविधिजथाजोगकोसं
ग॥ कारजमेसबपाइयैकारणहीके

१०

ग॥२२॥ अमविनुकारजसिद्धिज
वउद्यमकरतेहोइ॥ हारवासतिय
उरकसो अपनेलाइकजोइ॥२३॥ नी
चसंगअचरजनहीलछमीजल॰
जाअहि॥ जसहीकोउद्यमकियो॰
नीकपायोताहि॥२४॥ अथविचि
त्रालंकार॥ इछाफलविपरीतिकी
कीजेजतनविचित्र॥ नवतउच्चता॰
लहनकोजोहेपुरषपवित्र॥२५॥
अथअधिकलंकार॥ अधिकाईआ
धेयकीजवअधारतेहोइ॥ जोआ
धारआधेयकोअधिकअधिये
होइ॥२६॥ सदसिंधुकेतोजहांतो
गुणवरनौ॥ सातदीपनौषंडमे

सात

कीरतिनहीसमाति॥ सदसिंधु
केतोजहांतोगुणवरनोजाति
२७॥ अथअल्पलंकार॥ अल्प
अल्पआधेयतेंसूछमहोइअधा
र॥ अंगुरीमेमुंदरीकृतीमजमेकर

तविहार॥ २८ ॥ अथ अन्योन्यालंकार॥ अन्योन्यालंकार है अन्यान्य नि उपकार॥ ससि सो निसि नीकी लगै निसिहीं मै ससि सार॥ २९॥ विसेषलंकार॥ तीन प्रकार विसेष है अनाधार आधेय॥ थोरो कछु आरंभ जब अधिक सिद्धको देय ३०॥ वस्तु एकको कीजिये वर्नन ठौर अनेक॥ नभ ऊपर कंचन लता कुसुम सुछहै एक॥ ३१॥ कल्पत रुछुदेष्यो सही ताको देषत नैन॥ अंतर बाहर दिसविदिस वैहै तीय सुषदैन॥ ३२॥ व्याघात कछु और तें कीजै कारन और॥ वहुत विरोधी तें जबै काज त्यार ईये ठौर॥ ३३॥ सुषपावत जासो जगत तासो मारत मार॥ निहचे जानत वालतें करति काहि परिहार ३४॥ अथ

कारनमालालंकार॥ कहियेगुं
फपरंपराकारनकीजवहोत॥
नीतिहिधनधनत्यागपुनिताते
जसउद्योत॥२५॥एकावली॥ग्र
हितमुक्तपदरीतजवएकावली
वषानि॥ द्रिगस्रुतिलोंस्रुतिवाहु
लोंवाहुजंघलोंजानि॥२६॥अथ
मालादीपकलंकार॥दीपकए
कावलिमिलेमालदीपकना
म॥कामधामतियहियमयोति
यहियकोतूंधाम॥२७॥अथसा
रलंकार॥एकएकतेसरसजव
अलंकारयहसार॥मधुसोम
धुरीहैसुधावनितामधुरअपार॥
॥२८॥अथजथासंष्यलंकार॥
जथासंष्यवरननविषेवस्तुअ
नुक्रमसंग॥करिअरिमित्रविप
त्रकोगंजनरंजनभंग॥२९॥अथ
पर्जायलंकार॥ हैपर्यायअनेक

कोक्रमसोंऽम्रसायएक॥ फिरिक्र
मतेजवएककोऽप्राऽप्रयधेरैऽप्रने
क॥४०॥ ऊतीतरलतावरनेमैमई
मंदताऽप्राइ॥ ऽअंबुजतजितियवद
नदुतिचंदहरहीवनाइ॥४१॥ अथ
परिवृतलंकार॥ परिवृतहिसीजे
अधिकथोरोईकछुदेइ॥ अरिंदरा
कदाछ्यहएकवांनवरलेइ॥४२॥
अथपरिसंख्यालंकार॥ परिसंख्या
इकथलवरजदूजेथलठहराइ॥
नेहहांनहियमैनहीमईदीपमैजा
इ॥४३॥ अथविकल्पलंकार॥ है
विकल्पयहकैवहैइहिविधिकेव
लांत॥ कैंहिहैदुखकोऽअंतअवजम
कैपारोकांत॥४४॥ समुच्चयल
कार॥ दोइसमुच्चयभायवहकेहूर
कोउपजैसंग॥ एककाजचाहैकस्यो
हैअनेककइकरंग॥४५॥ नुऽऽप्रारिभा
जतगिरतफिरिफिरिभाजतसतराइ॥

जोवनविद्यामदनधनमदउपजावतऽरु ३ ४६ ॥ अथकारकदीपकलंकार ॥ कारकदीपकएकमेंक्रमतेंभावअनेक ॥ जातिचितेंआवतसंसतपूछतवातविवेक ॥ ४७ ॥ अथसमाधिलंकार ॥ सोसमाधिकारजसुगमऔरहेतमिलिहोत ॥ उत्कंठातियकोभईअथियादिनउदोत ॥ ४८ ॥ अथप्रत्यनीकलंकार ॥ प्रत्यनीकसोप्रवलरिपुताहितसोवरिजोर ॥ नैनसमीपीश्रवनपरकंपचढोकरिजोर ॥ ४९ ॥ अथकाव्यर्थापत्तिलंकार ॥ काव्यर्थापतिकोसवैइहिविधिवरनतजात ॥ मुखजीत्योवाचंदसोंकहाकमलकीवात ॥ ५० ॥ अथकाव्यलिंगलंकार ॥ काव्यलिंगजववजुक्तिसोंअर्थसमर्थनहोइ ॥ तोंकोंमेंजीत्योमदनमोहियमेंसिवसोइ ॥ ५१ ॥ अथअर्थांतरन्यासलंकार ॥ सामन्यतेविसेषदृढितवअर्थांतरन्यास ॥ रघुवरकेवरगिरितरेवडेकरैनकसा

स ॥ ५२ ॥ अथ विकस्वरलंकार ॥

विकस्वर है। तविसेंजव फिरि सा स

मान्य विसेष ॥ हरि गिरधास्यो सत्य

रुष भार सहै जो सेष ॥ ५३ ॥ अथ

प्रौढोक्ति लंकार ॥ प्रौढोक्ति वरन

न विषै अधिका ह्वै अधिकार के

सप्रभाव सरैन। घन सघन ति

मर के तार ॥ ५४ ॥ अथ संभावना

लंकार ॥ जौ यौं हो तौ यौं कहैं सं

भावना विचार ॥ वकता होतौ से

स सो लहतो तौ गुण पार ॥ ५५ ॥ अ

थ मिथ्याध्यवसति लंकार ॥ मिथ्या

ध्यवसित कहत है अलंकार इहि

रीति ॥ कर मै पारद जो रहै कै रैन

वे का प्रीति ॥ ५६ ॥ अथ ललितलं

कार ॥ ललित कह्यो कछु चाहिये

ताही को प्रतिविंव ॥ सेत वंध कर

रिहै कहा अव तें उतरें अंव ॥ ५७ ॥ स्यो

अथ प्रहर्षन लंकार ॥ तीन प्रह

२२

थैं न जतन बिनु वांछित फल जो होइ ॥ वांछित हू तें अधिक फल अम बिन लहियै सोइ ॥ ५८ ॥ साधत जाके जतन कौं वस्तु चढै कर सो इ ॥ जा को चित चाहत हुतो आइ हुती सो इ ॥ ५९ ॥ दीपक कौं उद्यम कियो तौ लौ अथयो भानु ॥ निधि अंजन की औषधी सोधित लह्यो निधानु ॥ ६० ॥ अथ विषादलंकार ॥ सो विषाद चित चाह सों उलटो कछु है जाइ ॥ नीबी परसत सुति परी चरणायुध धुनि आइ ॥ ६१ ॥ अथ उल्लासलंकार ॥ होय संत पावन करें गंग धरे यह आस ॥ गुण औगण जब एक तें और धरै उल्लास ॥ ६२ ॥ अथ अवज्ञालंकार ॥ होत अवज्ञा और के न लगे गुण अरु दोस परस सुधाधर किरन तैं ष

लेनपंकजकोस॥ ६३॥ अथअनु
ग्यालंकार॥ होतउप्रवग्यादोषकों
जबलीजैगुणमानि॥ होहिविपति
जामैसदाहियेचढतहरिध्यानि
॥ ६४॥ अथलेषालंकार॥ गुणमेदो
षजुदोषमेगुणकल्पनासुलेष॥
सुकयहमधुरीवातसोंवांधनल
स्योविशेष॥ ६५॥ अथमुद्रालंका
र॥ मुद्राप्रस्तुतिपदविषैओरोअ
र्थप्रकास॥ आलीजाइकितपिव
तहजहांरसीलीवास॥ ६६॥ अथ
रत्नावरनलंकार॥ रत्नावलिप्रस्तु
तिअरथक्रमतेओरईनाम॥ रसिक
चतुर्मुषलक्षमीपतिसकलग्यान
कोधाम॥ ६७॥ अथतदुणलंकार
तद्गुणतजिगुणआपनोसंगति
कोगुणलेइ॥ वेसरिमोतीअधरमि
लपदमरागछविदेइ॥ ६८॥ अथपूर्व

१४

रूपलंकार॥ पूर्वरूपलै संगगुरण त
जिफिरअपनो लेत॥ दूजैवे गुरण नामि
टे कियेमिटन को हेत॥१६९॥ सेषस्या
म होसि वगरैजस तै उज्जल होत॥ दी
पमठार हूं कियोरस नाम निउद्दोत
॥१७०॥ अथअतद्गुणलंकार॥ [illegible] अ
ती तद्गुण संगति नैराज वगुरण लागत
नाहि॥ पियअनुरागीनामयो वसि
रागीमन नाहि॥७१॥ अथअनुगुण
लंकार॥ अनगुण संगतते जवे पुर
वगुण सरसाइ॥ मुकतमाल हिय
हांसतें अधिकस्वेद ह्वैजाइ॥७२॥ अ
थमिलितलंकार॥ मीलितसो सा
दृस्यतै भेद जवै [illegible]लखाइ॥ अरुण
परणतियचरणपरजावक लहिन
जाइ॥७३॥ अथसामान्यलंकार॥ सा
मान्यासादृस्यतै जानपरैन विसेष
नहिविसेषअस्तुति कमल अरु तिय ले
चन अनमेष॥७४॥ उन्मीलितलंका

उन्मीलित साद्रस्यतें भेद फुरै जब मो
नि। कीरति आगे तुहिनगिरि छुवै प
रत है जानि। ७५ ॥ अथ विसेषलंकार॥
यह विसेष विसेष पुनि फुरे जु सम
ता मांऊ। तियमुख अरु पंकज लखै
ससि दरसन तें सांऊ ७६ ॥ अथ गू
ढोत्तरलंकार॥ गूंढोत्तर कछु भावतें
उत्तर दीनो होत। उनै बेतस तरै मैं ने
पथिक उत्तर न लखक सोत ७७ ॥
अथ चित्रलंकार॥ चित्र प्रश्न उत्तर दुहन
को एक वचन में होइ। मुग्धा तिय की
केलि रुचि गेह कौन में होइ ७८ ॥
अथ सूक्ष्मलंकार॥ सूक्ष्म पर आसै
लषै सेनन में कछु भाइ॥ मैं देख्यौ उ
हि सीस मनि केसनि वौ छपाइ ७९ ॥ लई
अथ पहितलंकार॥ पहित छपी पर
भात कौं जानि दिषावै भाव। प्रातहि
आए सेज पिय हंसि दाबत तिय पाव ८०॥

१५

अथ व्याजोक्ति लंकार ॥ व्याजउक्ति कछु औरविधि कहे दुरै आकार सखि सुष कीने कमल आन कजान अनार ॥ ८१ ॥ अथ गूढोक्ति लंकार ॥ गूढ उक्ति मिसि और के कीजे पर उपदेस ॥ कालि सषी हो जाउगी पूजन देव महेस ॥ ८२ ॥ अथ विवृतोक्ति लंकार ॥ सो बछ प्रापरगट किए विवृतोक्ति है औन ॥ पूजन देव महेस कौं कहत देवि ये सैन ॥ ८३ ॥ अथ जुक्ति लंकार ॥ है जुक्ति कीने क्रिया मर्म छपायो जाइ ॥ पीय चलत आंसू चले पोंछि त नैन जलाइ ॥ ८४ ॥ अथ लोकोक्ति लंकार ॥ लोकोक्ति कछु वचन जो लीने लोक प्रवाद नैन मूदि षटमास लो सहिये विरह विषाद ॥ ८५ ॥ अथ छेकोक्ति लंक लोकोक्ति कछु अर्थ सों सो छेकोक्ति जानि ॥ जो गाइन को फेरि है ता लिय

नं जयमानि ॥ ८६ ॥ अथ वक्रोक्ति लंकार ॥
वक्रोक्ति स्वर श्लेष सों अर्थ फेरि जो हो
इ ॥ रसिक अपूरब हो पिया बुरो कह
त नहि कोइ ॥ ८७ ॥ अथ सुभावोक्ति
लंकार ॥ सुभावोक्ति यह जानिये व
र्नन जाति सुभाइ ॥ हंसि हंसि बोलत
फिरि जु कति मुह मोरत इतराइ ॥ ८८
अथ भाविक लंकार ॥ भाविक भूत
भविष्य जो परतष होइ वनाइ ॥ वृंदा
वन मैं आजु वह लीला देषी जाइ ॥ ८९ ॥
अथ अत्युक्ति लंकार ॥ अलंकार अत्यु
क्ति यह वर्नन अतिसय रूप ॥ जाच
क तेरे दान तैं भए कलपतर भूप ॥ ९० ॥
अथ निरुक्ति लंकार ॥ सो निरुक्ति
जु जोग सों अर्थ कल्पना आन
ऊधौ कुवजा वस भए निरगुण हे हे
निदान ॥ ९१ ॥ अथ प्रतिषेध लंकार
सो प्रतिषेध प्रसिद्ध जो अर्थ निषेधो

१६

जाइ॥ मोहन कर मुरली नहीं कछु अकबु रीवलाइ॥ ९३॥ अथ विधिलं अलंकारविधिसिद्धि अर्थ साधि ये फेरि॥ कोकिल हे कोकिल जवै रितु मै करि है टेर॥ ९४॥ अथ हेतु लंकार हेतु अलंकृत होइ जब कारण कार ज संग॥ कारण कारज ते जबै वस्तु एक ही अंग॥ ९५॥ उदित भयो ससि मानिनी मान मिटावन मानि मेरी रिद्धि सिद्धि यह तेरी कृपा वखानि॥ ९६॥ इति अर्थालंकार॥ अथ छेकानुप्रास आवृत वर्ण अनेक की दोइ दोइ जब होइ हे छेकानुप्रास सो समता विनु है सोइ॥ ९७॥ अंजन लाग्यो हे अधर प्यारे नैनन नि पीक॥ मुकुमाल उपटी प्रगट कठिन हिये पर टीक॥ ९८॥ अथ लाटानु प्रासलंकार॥ सोलाटानुप्रकास जब पद की आवृति होइ॥ सब्द अर्थ के भेद

सों भेद विनाहू सो इ ॥ १९९ ॥ पिय निकट
जावे नहीं घांम चांदिनी ताहि ॥ पीय
निकट जावे सबी घांम चांदिनी ग्रा
हि ॥ २०० ॥ अथ अमवालंकार ॥ जम
कसवद को फिरि श्रवन अर्थ जु दो
सो जानि ॥ सीतल चंदन चंद ही अ
धिक मृगनि तें मांनि ॥ २०१ ॥ अथ व
ति अनुप्रासालंकार ॥ प्रति छरु प्रवृति
वहु रिवृति तीनि विधि मांनि ॥ मधुर
वरन जामे सवे उपनागरिका जानि
॥ २०२ ॥ दूजे परुषा कहत सव जामे व
हुत समास ॥ विनु समास विन मधु
रता काहि कोमल तास ॥ २०३ ॥ प्रति
कारी मारी घटा प्यारी वारी वैस ॥ पि
य परदेस अज्यों सयहृप्रवति नाहि
सदेस ॥ २०४ ॥ कोकिल चातक भृंग
कुल केकी कठीन चकोर ॥ सोर सुने
धरक्यो हियो काम कटक प्रति जोर
॥ २०५ ॥ घनवरषत दामिनि लसे दस

१८

दिसि नीरत रंग॥ दंपति हियेहुलास सों अति सरसात अनंग॥ २०६॥ अलंकार सब अर्थ के लहे रुक सों आठ॥ करे प्रगट भाषा विषे देषि संसकृत पाठ॥ २०७॥ सब्दालंकृत बहुत है ह्ये को यांयोग॥ अनुप्रास षट विधि कहे जो है भाषा योग॥ २०८॥ ताहीनर के हेतु यह कीनो ग्रंथ नवीन॥ जो पंडित भाषा निपुन कविता विषे प्रवीन॥ २०९॥ लछन तिय अरु पुरुष के हाव भाव रस धाम॥ अलंकार संजोग ते भाषा भूषण नाम॥ २१०॥ भाषा भूषन ग्रंथ को जो देषै मन लाइ॥ विविधि अर्थ साहित्य रस समुझै सबै बनाइ॥ २११॥ भाषा भूषन के पढे रहे न भाषा भूष॥ गुन प्रकास सो लहै पानी उष॥ २१२॥ इति श्री महाराज जसवंत सिंह राठौर विरचिते भाषा भूषन समाप्तं शुभं भूयात

श्री राम जी सहाय राधा वल्लभ

॥ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ शिवो जयति॥ नरक तस्रुत किधौ पन्नगके पूत किधौ राजत ॰ प्रभूत तम राजके सेता रहे॥ मखतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन किवे कुहू केकुमार हे॥ कोप की किरनि ज्वाल नील कै जनीके तंतु उपमा अनंत चारु चमर सिंगार हे॥ कारे सटकारे भीजे सोधे ते सुगंध वास ऐसे सेवल भट नव बाल तेरे बार हे॥१॥

॥पाटी वर्नन॥ दरस दरस को परस होत बलिभद्र किधौ है सरस सासनि सुरभान की॥ रसराज पंछी वे उभे पखवा से सोहे तानिवे ठौ रूपा बार रेम चकविता न की॥ तमके पटल तापि टाने है मकूट सो कि सघन कादंबिनी कसौटी पंचवान की॥ पाटी ते री तरुनि॰

१८ जुगलऐसीराजे मानौ जामीज
गजमुनासिखारतनसानकी
॥२॥ वेनीवर्नन॥ वेनीनवला
का वनाइ सुहीवल्लि नइवुस
मप्ररूनपाट मानौ पोहिय
तिहै॥ कारीसटकारीनीकी
लागै छीनकटिनीचे पन्नगकी
नारिनु की दुतिदोहियति है॥
सातिकसताई प्रसिताई मेज
तामसकीराजसरताई मिल
मनमोहियतिहै॥ धरतित्रिगु
नवपुत्रिभवनजीतिवेकौमा
नौमहामायाई सदेहसोहिय
तिहै॥३॥ मांगवर्नन॥ तमके
विपनमै सरलपंथसातिगर
को किधौ वनवारीवीचसजन
को किधौनीलगिरपरगंगजल
कीधारहै॥ किधौ वनवारीवीच

राजतरजतरक्षकीनोचंद्रवर
ग्रधिकारिकोप्रहारहै॥मापतिसिं
गारभूमिडोरीहासरसकीविवल
भद्रकीरतिकीलीकसुकुमारहै॥
पयकीग्रसारधनसारकीग्रसार
भोगग्रमृतकीग्रापजउपाईकर
तारहै॥४॥मालवर्नन॥थापीवि
धिजसकीजनमभूमिसेसबत
उपजतजहांसवसुकृतकोजाल
है॥तिलकतरोवरकीछायासुषत
लपकिधौरसकेग्रगारनिकोग्र
जिररसालहै॥भागकेसोवासनसु
हागकेसोग्रासनहेमोहनीको
सासनकरोतेवसलालहै॥कामके
तुरंगनकीथापकीधरनिजहकिधौ
वलिभद्रमोरीमामिनीकोभालहै
॥५॥विंदुवर्नन॥वपुवछसोलगा
योनायोगुरुवंधुजानिभुग्रसुतमे

टिवेकोउडपनरिंदुहै॥ किधौंरवि
सारथीकुरंगरथसारथीमोकिधौं
निजुनारिउरपरधरें इंदुहै॥ सोति
नकोगर्वगहिवेकोहै हनकन
वलिनद्रसवसुषदेनदुषिनिंदु
है॥ रागपियमनको परागमुष
पंकजकेभामिनीकेभालकिधौं
वंदनकोबिंदुहै॥६॥ मोहवनेन
सोरभसुगंधस्वासचंपकलीना
सिकाहैकिधौंअलिउरतेंअघ्रान
करतुहै॥ किधौंमुषचंदधरोवाह
नकुरंगकेधमरकतजुवाकिधौं
ननहहरतुहै॥ किधौंवलिमद्रमा
लकंचनकेभाजनमेंदीपजुगलो
चनकोकाजरपरतुहै॥ भामिनी
कीभौंहैकिधौंकामकीकटारीम
नोजिनदेषेसोतिनकोगरवुगर
तुहै॥७॥ पलववनेन॥ पातरप
वित्रपहिरेहैपीतवासकिधौंयेई

है सकलसुभवासना को घ्रानहै ॥
पियरूपपीवे कू अधर प्याछवलि
भई सो तिनको एकपल्लपरतिनिद्र
नहै ॥ खंजनके पिंजरीकनवकेवि
संपुटकि तिनमै वसत प्यारे प्रीतम
के प्रानहै ॥ कामतुलापल्ला है फल
कलतेरे प्रेमनी कि त्रियाके कपाट
मानौ प्रानके त्रानहै ॥ ८ ॥ वदग्रीव
कामकेविदारनकी झारइसकीकी
नीवारि सामलसघनकमलाकर
केकूलहै ॥ लोचनरूपनंतहै विरस
नासहसचारिचारूचोरकाजरकि
रसराजपूलहै ॥ पल्लवरूपनंगक
रतलुनके पल्लवहैविधौचितुचो
रकीहजारभुजमूलहै ॥ तरुनीकी
वरूनीनीकीवरूनीविराजेऐसीव
लिभइमोहिनीपथविाटेछोरमथत
लहै ॥ ९ ॥ तोरेवचन ॥ पयभरेमाजन

निपैरत्नु मधुप मध्य किधौ छीरनिधि मध्य दीपजुग वारे है ॥ विसद वसन वीच सोधि के विदूका किधौ मुषे देषिवे को मैन दरपन समारे है ॥ कमल दलनि परमन मयदेव किधौ पिय मन द्विज पजिवे को पाऊ धारे है ॥ छाती धरे छिति जीतिवे के काज वलि भद्र तमकी तुरस वीत रनते रतारे है ॥ १० ॥ ओष्ठवर्नन

पाटल नयन कोकनद के से दलदोउ वलि भद्र वासर उनी दी देषी वाल मैं काम के वर्त प्राइ नासिका उड पवैठो वेल तसिकार लरनी के नषता मै लोचन असित सित मै लोहित लकीर मानो फुसे जुग मीन लाल रेसम के जाल मै ॥ ११ ॥ नेत्रवर्नन

परम प्रवीन मीन केतन के मीन किधौ सुष के सरोज है फुलाए पिय मीन के सरद के षंजन मिले है मुषचंद वै धौ जारे है कुरंग रथ वाहन समा

सोभा के समुद्र निमै वडवा की प्रभा किधौ देवधुनी भारती सु मेरो पुन्य काल मै ।१२

नके॥मुननिके मन उपजावति॥
नेकमाइ मेरे जानरहे है विधाता
पंचवानके॥ वालातेरे नैनकिवि
सालसालसोतिनके वलिभद्र
सानेहे सुहागबरसानके॥२२॥
काजरवर्नन॥ कंचनके फंदपरे
षंजनतलफकिधौफासे जुगमी
ननागफाससो मदनहै॥ काम
केकसारनकी कूलनिकी भूमि
काकि चाहियततिलक सिंगारके
सदन है॥ विसिषपुलिंदमैनमां
जेहै प्रदीपनसो वलिभद्र मुनी
निके मननके कदनहै॥ काजरकी
रेषरूरेषी लोचननमानोकी
नेचितचोरनके मेचकवदनहै
॥२३॥ सुधीचितवनवर्नन॥ नैन
हीनिहारीनैननायकासुयाना
रिमुननिके मनमनसिजसेत

४

२१

नोतुहे।बिनहीकटाक्षकाटेलाज
नुकेकवचनुकाजरदयेतेकोटि
कामकोउदोतुहे।जोहैनिर्विकार
तेविकारबौरैंग्प्रोरनिकैछाडेकों
कुलसुभाउजाकेजेसोगोतुहे।।
टेढीचितवनिमेवरैगीकहवलि
मइस्त्रधीचितवनमेंग्रसाधुसा
धुहोतुहै।।१४।।तिरछीचितवन।।
विधोऋतिमंडलकुवेनीदति
गतागतहोतमीनकेतनकेमी
नसरकसहे।मित्रनुसोबहेसु
यहीकीबातवलिमइपछतिकि
मेत्रमननिसोवरकसहे।लव
धतरुननिकोछुटेछुटामेचतु
रनिविसिषविसारपाये काम
करकसहे।उज्जलसरलचत्र
चलतहेरैनदिनग्रांषकोग्रपं
गनकीग्राछतरकसहे।।१५।।

सिका वर्नन॥ सोभाकीसके लिउ
चीवेलिवांधीवलिमद्रराष्योसन
लोचनकुरंगनिकोरोसुहे॥ दीप
तिकोदीपसुषदीपकोसुमेरुम्द
मुषसुषसारसकोसिफाकंदजो
सुहे॥ कलपतरोवरकीकलिकासु
गंधफूलीउपमाग्रुनूपकोटिवि
धिनिउजासुहे॥ तिलकोसुमनहे
किनासिकातरुनितेरीसुरनिकी
सरनाकिसौरभकोकोसुहे १६॥
नाकवेधवर्नन॥ सोभासुरसदन
कोवतायनवलिमद्रकिधोमहा
मोहनीपपीलकाकोगेहहे॥ पेनो
पांचवानकोछवीलोछिद्रछाजत
हेदेषिवेकोदेहमेअनूपदेहजकोदेह
हे॥ पियमनरोकिवेकोनिगडकि
लीकोरंध्रसुषमधुकरकोसुषिर
जसोनेहहे॥ मेनकेमवासेमेधनु
धरकोमोरचोहेकिधोवामनासिका

५
२२

मेवेसरिकोवेहहे॥१७॥नषवर्नन॥

नैननटवानुकीनिकसवेकीकुंड
लीकेपारसत्रदसकीचरणचंदर
थैको॥किधोवलिभद्रकीनोसूछ
मसुहागजानिजातनूपकुंडपियर
मनकीसपथको॥किधोजगजीत
कामदीनोहैकितोहिवामकामदे
वचवेकिचक्रग्रपुहथको॥नी
कीनासापुटनीकीनथनईकिधो
नाहिचितफसवेकोपंदरोध्यान
नमथको॥१८॥कपोलवर्नन॥

सुषमाभरतभरेपरमाकेसाचेटरे
सुधासोसुधारधेरेदर्पनसुदेसहे॥
श्रवनिनिवचाईहेकिदारकिधो
स्वातिनूकेतीनोपुररूपपुरजन
केनेरसहे॥रपटतलोचनचित
कदेषिवलिभद्रहलकतचोधवि
लकनिकेनितेसहे॥गोरेगंडम
डलग्रुषंडजोतिवंततेरेछविके

छपाकरके दुति के दिनेस है ॥१९॥

कपोल गाड वर्नन॥ नमरी परति ज
ल लोचन के जोरकि धौ जामै छवि
कढति सकल प्रमदानि की निक
स सकै न वलि मढ करि हारी वलि
नैनन गनाइवे की प्रौडी विधिवार
न की उदित नवीन लोल रुचिर मर
त मानो रूप कीन मनकिधौ कुडी मु
षदानकी पियमन पारद छुटिकि
वे की गाड किधौ गाडे गंडमंडल म्रदु
लमुसिकानकी ॥२०॥ तिल वर्नन॥
किधौ चतुरानन नि चितेरचित्रकार
लिष्यो लगि गयो लेषनि को टंकचि
त लोल के॥ कनक रसा मै रसराज
के निलय मैं मानो मुकुर मै प्रनप्र
तिवायाम षल लको॥ परी ससि मंड
ल मै छुटि तिन ताकी छांह वलि मट
लीन सुरवाफ मान वोल को॥ मानो
मार भरो नेह नैननि निहारिना हरौ

सोनेहुवंततिलतियकेकपोलको॥
॥२१॥श्रवनवर्नन॥ रूपकोउपायक
रिराषीहैध्यजाबुतारिकामसारजंत्र
कीकिकंचनकपोतहै॥ पियकेवरन
स्वातिवुंदनकीसीपिजगमुमतिसु
मादमुकताहलतनोतहै॥ लोचन
कुरंगनिकोकीनीहैपरषिधारवलि
भद्रजोकनिरूपतिलोलहोतहै॥ सु
षकेसिषरेहैस्रवनतेरेसुंदरीकि
दरीहैसुहागरागसागरकेसोतहै
॥२२॥ताटंकवर्नन॥ जरतजराइज
गमगतिसहसकरवलिमनव्यष
कीकुमारिकाकेमानहै॥ धरतत्रधा
रहैप्रपारतीठनैजनुकोफेरुप्रास
जेगमारसेपेषरसानहै॥ उपमान
भ्रानप्रानरंजनविहारवरतीउव
केतारतरजानतसुजानहै॥ चंदसुष
चरनकेकामचक्रवकेचक्रकिधौ
तियतरुनतसोनातेरेकानहै २३

॥ओठगाडवर्नन॥ किधौमुषदुजराजतरपनकेभाजनहैकिधौप्रानतपनकटोरापियदानको॥ तापससिरूपकीतपस्याकोतपनकुंडसोभाकोसलिलकुंडसरचनकोन्हानको॥ जातरूपकंदराकिसुंदरीसरनताकिवलिमइप्यिरहैवस्योहैप्रियानको तेरीतियउरधअधरकीपनारीमधिकिधौपियलोचनपियालोमधुपानको॥२४॥ओठवर्नन

दामकेसेचीरेओठअलपसुरेषअतिसुंदरसुघरइंदुनारिकोसोतनुहै॥ मधुरमधुरनारिगफलकीसीफांकधरीहैसुधारसोधिसुधाकोमदनुहै॥ सरसरूपकविंवलियेसुकचंदगोदमानोवलिमइमहामोहनीकोधनुहै॥ जीववंधुविद्रमअनारकलिकाकेदलतेरेअधरनकीअरुनताकोअनुहै॥२५॥ दसनवर्नन॥ किधौ

१५८७

२४

कुंदकलिकाकीअवलीअपकिधौ
वानीविपंचीकीसुधारिधारीसार
हे॥सुधाकेसदनससिसिसुआ
योश्रीयकाजकिधौमुखवारिमै
वारजकीवारहे॥जलकतरुचिर
वतीसवअवलिमद्रचमकतचा
रुविजुरीकीउनहारहे॥अम्रतके
कनतपोधनकेविमलतनतेरए
वदनचंदवदनमझारहे॥२६॥रस
नावर्नन॥कमलवदनमधकम
लाकेकाजछविराषीहेकमलद
लतलपसलारिहे॥किधौयटतंत्र
नुकीलिपिवलिमद्रजहकिधौष
टरचादनकीपरषनहारीहे॥ललि
ततमोररंगगुनकीकसोटीमानौ
मंत्रनुकीमूरतिहेपरमारथकीया
रीहे॥रसिकरसीलीप्यारीतेरीम
धुरसनाकिपंद्रहरसनकीरसना

ग्रनंदकारी है ॥ २७ ॥ वानीवर्नन ॥
विमल वरनकी है किधो जहफू-
लदामग्र्कारयकी सुग्रलपपि
यूषहै ॥ पियमन साधिवे कों किधो
ग्रनहदधुनि वलिभद्र जाहि सुनि
भाजीनीद ग्रूषहै ॥ दरपदुरेफही
कौ पंषनकी सुरधुनि सुरनकी मा
धुरी कि मधुरपियूषहै ॥ प्रेमरससा
नी सुषकीरति निधानी वानी रा
गही की रसना रसनु ही को ऊषहै ॥
२८ ॥ हासवर्नन ॥ किधो द्विजराज
की तपस्या ही को तेज जह किधो रस
ना की ग्रग्र की रतवो भासुहै ॥ वलि
भद्रता ही कीतरंग सुभ दिषयति कि
धो सुरग्र्पगा को ग्रानन मै वासुहै ॥
सुरनि कीजोति सुरगुरु की मरीचि
का कि वीच का सुवीच चतुराई को
प्रवासु है ॥ पियको कपट्ट पयपानु

९
२५

नुकोचंद्रहासस्युषकोसुमनको
किसोदरीकोहासुहै॥२८॥ग्रीवा
वर्नन॥किधोंप्रकुरागरागराज
सकोरूपनिजुकिधौप्रातपंकजप
रागद्विजद्वारहै॥ननतरूनाईको
अरुनउदेताकीदुतिश्रीवेगेह
श्रीअषंडकुसमविछायेहै॥सो
भाहीलेलाभियतदेषिमनमोहि
यततीन्योलोकनरिनिरषि
नैननायेहै॥तियतेरवदनतमो
रषचिराषीमानोवलिमद्रवानि
हिवसनपहिरायेहै॥३०॥मषसु
गंधवर्नन॥पूरिपरिमलमलया
चलउरोजनकोनिजुनीरहारीहै
कमलपदपानिको धुनिधुनित
पनहैगंधकलीनासिकाकोअ
धिकअमोदगंधकुंदकलिका
नको धरूपतअनरूपअवेवोलेते

वदनवासवलिमद्दयतमधुप
सुवदानिको॥ सोंधेभीजीभारती
गुलाबसोप्रस्वेदकनतेरोदेहदीप
तुसुगंधनकीघानको॥३१॥चिवुक
वर्नन॥ कनकवरनकोवनदके
वरनग्रुरमलकतिझाईतामेवस
नरदनकी॥ कीनीचतुराननचतु
ररचिपचिकरिग्रापुप्रेसीचौकीग्रा
पुग्रासनमदनकी ग्रंगुलसोवाके
उपमानकोग्रवधिसवसुमिलसो
पानमनोसीयकेसदनकी॥ सुंदर
सुढारहेचिवुकुनवनायकाकीके
धोवलिमद्रूपातसाहीहेवदनकी ३२॥
चिवुकचिह्नवर्नन॥ चंदनकेचरन
परिउवस्योतनकतनुकिधोतमो
गुराहीकोतनुग्रतिछीनोहे॥ ला
गरहोलोभमकरंदजानिवलिमद्र
सारसमधुपकोकिमनुहरिलीनोहे॥
मानकलिधोतपीठिवैठोरसनायक
सोपियलोचनानिकोपरमपददीनोहे॥

२
२६

कामरंगरेजबांध्याचूनबीकोचिहुज
हविधोतियचतुरचिबुकचिहुदीनो
है ३३॥मुषवर्नन॥पानपरदनकी
मदनमलकृतअतिरूपकीतरंगता
मेप्रानतानियतुहै।जोवनकीजोति
जगमगतप्रभासीमानोअजिरउ
दोतुताकोउरआनियतुहै।मुकरते
अमलाबनायोहेविधाताविधुवलि
भद्रयहेउपमानमानियतुहै।मे
रेजानजाईझलकतुतेरेआननकी
ताहीकोउजेरोजगजोतिजानियतु
है ३४॥सुभवोलवर्नन॥आननकी
आपकहिवेकेकाजवलिभद्रकविको
रिउपमानमनमेवसतुहै जेईभावद
षतअघातनहिनेननिको तेईभावप्री
तमकेमनमेवसतुहै गोरोवदुसरो
तियसुंदरवदनतेरोवोलतनजलां
तअलसातझलसतुहै मित्रकीकिर
एपरसतकोकनदमानोविनुकुमुदि

तहातषिनविकसतुहै ॥३५॥ पोनदुलरी
मुत्सरीवर्नन ॥ त्रिभुवनरूपकीत्रिरेषामो
हनीकिकिधौसुरनरनागछविकरन
निवंदकी ॥ पोतकलमेचकदुलरीदुति
दमकतिमानोअंसहंसकेसहसतिसंग
मेदकी ॥ झलकतसोभामुत्सरीगोलगोल
ग्रीवकिधौहैविराजतिकिरनिमुषचंद
की ॥ वलिभद्रकामकेकलंवनकीफो
किकिधौकंवुकंठराजतकलितजंवूनंद
की ॥३६॥ भुजवर्नन ॥ ततनतरवरताकीः
उभेसाषावलिभद्रसुंदरसुढारिपूतिर
गोलसमतूलहै ॥ साचेभरिकाढेरेवि
धिदामिनीकीदोउदेहदमकतिदुति
डकूलहै ॥ सुषकेसरोवरकेपोषेहेम
नालमानोफूलेकरअग्रकोकनदके
सेफूलहै ॥ कामकुंदहेरेभाएकुंदनक
नकदंडकिधौभारीभामिनीकेभारभु
जमूलहै ॥३७॥ हथेलीवर्नन ॥ सुंद
रछवीलीप्यारीतेरीकरतलएतैः

१
२७

लिष्योहेविचित्रविधिविमलसुरे
षसो॥ कंचनसीदरसतमाषन
सीपरसतभरीहेसुहागसुभभा
गहीकीरेषसो॥ वंचितरयनिदि
नुनाहकेनयनवुधवलिभद्र
लागतिननिमिषनिसेषसो॥ क
मलकलीसीप्रेमनेमकीवंधपं
थरूपकेअनूपापितमिलेहेमनवे
षसो॥ २८ अंगुलीवर्नन॥ फूले
मधुमाधवीकेपुहपपुरनभवमा
नोवलिभद्रपंचसाषादेवतरुकी॥
केसरकलीसीकलधोतकीफ
लीसीकिधोफूलीमलीभातिकुंज
लताकामसरकी॥ कोमलअमल
अग्रदसचक्रचिह्नराजेजीतेदसहू
दिसाकिसोभासुरनरकी॥ तेरेकर
वसतकनकमंत्रधारीतंत्रकिधो
करपल्लवकिसोरीतेरेकरकी॥ २९

॥ मिहदीवर्नन ॥ कमलालिपायेआ
लयजुकासमीरसोकिदीनीकरत
लनुमिहदीमगनेनीहै। मुङ्काज
रायजरीपैघेनवपल्लवनुहस्ततन
मतनवरग्रहनुकीजेनीहै। मोतिनके
गजराकनकछितपरमानोउडगन
कीपांतिसुषचेनीहै। पहुचनिराज
तवलयवलिभङ्मानोकमलके
नालनुसीलीमुषनुकीसेनीहै ४०
रोमराजीवर्नन। लालगुनमुक्ता
सुरसुरीसरस्तीसीवीचसूरसुता
रोमराजीसुषदेनीहै। भयेसुघना
यककेद्रगहरिराइजूकेवलिभङ्स
कलकलषनिकौछनीहै। रसपति
हासअनुरागरसरसकिधौपदमा
पदमसुषपदनिसेनीहै। रजतमस
तकीत्रिरेषाहिरदैहैनीकीकिधौति
यतेरेउरगविधिवेनीहै। ४१। कुचव।

११

२८

मंगलकलसभरेमकरंदवलिमङ्
केधौसमदुंदिमसहोदरसमरके॥
किधौरहेसविसरसुताकेसरनसोच
चक्रवाकसावकसतायेससकरके॥
मैनकेमवासेमनमोहिवेकोमाद
ककिविमलसफलहेकिफूलसो
भातरके॥ उचप्रीनप्रेमनीपयोध
रवीऽप्रोपऽप्राछोऽप्रेपनसोऽप्राडेपि
ऽप्रधौरहरके॥४२॥ कुचलालीवर्न
न॥ किधौउदियाचलकोउदोतुरा
काजोबनकोऽप्रस्ताऽप्रस्तकिधौ
सिसुताईभानगतिहै॥ अंतरकोरा
गकिधौवाहिरप्रगटभयाकिधौमु
षरागकीझलझलकतिहै॥किधौ
वंदीवंदनकीनंदनीगयंदकुंभकि
धौउभैभालराजेशिवकसकतिहै॥
किधौवलिमङ्जाभैमूलद्वैसजीवनि
केऽप्रेसीकुचऽप्रगकीऽप्ररुनतालगतिहै॥
॥४३॥

कुच स्यामता वर्नन॥ किधौ लंबीलि
नु नलिनु किधौ कोरका किप्रमीकुं
भ भ्रत्त ते अनंग छाप दीनी है॥ किधौ
सित कंठ कंठ राजत गरल द्युति कन
कंगिरनु मानौ षंजरी नवीने है॥ सिसु
ता की तनुतात न कतन बधाई तम
ताम सबी शीति है तरुन तेज कीनी है॥
स्यामा के प्रनूप कुच अग्रन की स्यामता
ई किधौ बलिभद्र रस राज छवि छीनी
है॥ ४४॥ कुचसंधि वर्नन॥ तेरे भनु ग
ल उरोजन की संधि किधौ जमल
कुला सनं प्रा छा संसरन हे॥ चंद है
न हार तिई सपुरंदरेंन दिनु विसिधि
विसेष पालिपु हप को धनु है॥ लली
चित्र रो कि वै है हरी सुधि बुधि सब
अनही अनी तत हां नायकु प्रतनु है॥
आयो हुतो मित्र कमला पहीको बलि
मद्र प्रा बन न पायो सम्पूर कि राषा मन है॥ ४५॥

१२

२६

कंचुकीवर्नन॥ किधौसिसुताईके
पयानेकेसस्पानेतानेसुंदरसुठ
रपठगुटकाहेलाजकी कोकसा
लारूपकीकिकामिनीकीकेजमके
वलिभद्रकोमलकुलहकामवाज
की मोहनीकेजालकीउछालक
फूमीकुंमनकीडारीहेफूधारीकि
मदनगजराजकी गोरेगोरेगालउ
चतेरनीलकंचुकीकिपहरीसिलाह
रतिनाथकेसमाजकी॥४६॥रोमराजी
वर्नन॥ पागरसपतकीवुनतुनानि
गाउवेछोमिहरमनोमवकोपूरन॰
कोतारहे॥ सरलफूलकहीकीछाती
हेफूलपकिधौनषततेमागछुटे
भोगनीकुमारकी॥ वालातनसद
नसमारिवेकोवलिमद्रधरगयो
रेषासुमवंधसतधारहे॥ पातरेउद
रपरतेरीरोमराजीकिधौजमलउ

रोजनकेहाथीमिलवारहै ४७
अन्यच्च विषकीलतासीविनुपा
नभानदुहितासीविषजूतपासी
किधौभामिनीकीभांतिहै कुचच
केडोरनकीडोरीमषतूलकीवि
तीकिधूमीघटिनचटिपिपीला
पांतिहैं जूलपउदरपरतेरीरोम
राजीकिधौवलिभडुवानीकीवि
पंचीहोकीतातिहै ४८ त्रिवली
पारावाररूपकीतरंगतुंगवलिभद्र
जोवनजिहाजजलजियहिलजा
तिहै ज्ञाननिकेज्ञानजोगध्यानि
नुकेध्यानछुटैमुनमनसाकेडाडा
डोलडगुलातिहै जामेतीनोलो
कनिकीवामनकीसोभासवस
लिलग्रामलीनलोसमातिहै वि
धिकरवलीत्रिवलीयतेरीतियकि
धौछीनकटिजानिदीनीकंचनकीपां
तिहै ४९

हटरूपिनकाभानारिनामकूपकी
किवनरकितनुमिकरनुफरागतिहै ।।४९

३० ॥नाभिवर्नन॥ सोभाकीतरंगनिकेतो
पकौभ्रमरकिधौसोनेकीसीपांतिमे
सदनकीटकीनोहे॥ पियमनगोम
ककिधेलकीधलेलकिधौवलिमे
द्रपाधरीसुलाधकामदीनोहे॥ राधे
करिरूपचलसुचलताविसारसव
हेरिचितचंचरीकरंध्ररसभीनेहे
नाभितेरीतरुनीनिमानकिधौमो
हनीकीकिधौमनमाहनकोमोह
मनलीनोहे॥५०॥कटिवर्नन॥ ता
रसीतगासीवारलीकसीलकंजन
सीछलकीसीछुलकहिवोईछलि
यतुहे॥ चितनपरतिचकिजातिहे
चितौनिजहांनैननकीगतिकोगु
मानदलियतुहे॥ पगनधरतधस
कतहियोवलिनद्रुगनिभरतुड
गमगहिलियतुहे॥ कचकुचहारपौ
रवीरनिकेभारिभारऐसेजीनेलंक
सौनिसंकचलियतुहे॥५१॥ नितंव॥

जंघ प्रतिसघननितंवएषुपेषियत कटिघटिकेहरिकुमारकोसोमापुहे॥ विधुकेसेसिषरउद्धारहेउरोजउरमानोवलिमङ्प्रारचारजमिलापुहे॥ मिटेवेदवुधिवाल[illegible]विज्ञरसनाकोपनकेमिलापसवकलदईविज्ञरसनाको अनुलापुहे॥ आननकीगुरुतासुलपताईलंकमयोवारहीवरसगुरुसिषको मिलापुहे ५२॥ जंघवर्णन॥ कदलीकेषंभहेसप्रथममयूषकेतोसुभपियूषकेगुननुविनुहेरेहे॥ जाकेकाहूरोमनिकीपावेनरमनरुचिमेरेजानरंभाहूकेकरमकरेरेहे॥ रदमततिनकीद्विरदकरजेकहतधुरकामरथकीकिउपमाग्रनेरेहे॥ सोभाकेसदनकेकिकाचेकलधौतषंभकिधौमृगलोचनीजुगलजंघतेरेहे ५३॥ पिंडरीवर्णन॥ किधौवसवेलिवकेवेलनवनारविधिकिधौसोभाधरकेसुघरसुषदायकी

१४

३१

कोमलकमलदलकेतुकीकीकलिका
किकेसरिकलाईमानोमनमथरा
इकी। किधौवलिमद्रसोधिसकलसु
हागगुनसुचिररुचिररचिपचिदेव
नाइकी। जामासोतिवदनकौप्रेपन
सौमाडीतोतेकिधौप्रेमनीयेतेरीपिंड
रीसुभाइकी। ५४ जेहरिनर्तन। सु
मतिसिंगारुलोकसुंदरसुपनमन
प्रेयतपरमउपमाऊविसरतिहे गति
केसदनकिधौमदनमवासेहीके
गुरजपियाकीमतितिनसोप्ररति
हे प्रेमछत्रदंडकेविवाजेकिधौवलि
मद्रकलिधुनिरागरागनीनिनिदर
तिहे एरनमयंकमुखीएरीजहतेरी
सुमिजेहरिविहारीऊकेमनहहर
तिहे ५५ सातसताईरजोगुनकी
रताईमानोतामसकेत्यागसुथजन
केसहाइके कोमलकमलदलमोह
नीकीपुस्तककेराजतरुचिरविधिव
रनसुभाइके प्रेमदलदलकौसुपथ

भमिसोहे किधौरहेषचलोचनतुरंग
हरिनाइके॥ किधौमीनकेतनतलप
तामरसदल वलिभद्रतरनितरौछ्या
तेरेपाइके॥५६॥ जावकवर्नन॥ किधौ
जीवबंधुञ्चायोचरनसुगंधकाज
सोभितसकलसुभराजगुनसीमहे
फूलिफूलिसकुचेकलासीहारेको
कनदवलिभद्रकंटकसनालछिद्र
ग्रीवके कनककीभूमिपरिपूरिर
हेभारतीकोईगुरकेञ्चाकरवसतषि
यजीवहे रातोहेसरूद्ररसत्रपतेरेपा
इसोहेजावककीजोतिकेसिरानुकी
नीवहे॥५७॥ घुंघरूवर्नन॥ लाज
केसघातीकिधौघातीमुनिधामन
केलानमांहिवलिभद्रपातीयोंल
हतहे॥ जावकसरस्तीकेतटद्विज
दवकिधौकरतनिगमधुनिगघन
दहतहे॥ प्रीतकेवढावनकेपावन
हेभावनकेकाननकोकामकीकह
नीसीकहतहे॥ नूपरविचित्रतेरेच

१५
३२

रनपरननीकेतिनचितवतहीविचार
नरहतहै ॥५८॥ विछीयावर्नन ॥ नौ
वतिगतिनिकीकिरतिकीदुहाईका
मकारिका ~~अनवटअनु~~ सुहाईसोक
हाईअंगुपुभारती ॥ समरसमरका
जअनटनुवर वचसाजिवाअतत
वतासोंतिलाजतिनिहारती ॥ गु
नकेपूसंसोहैसुलागअसीवलि
भद्रमुदितउदितसहचरतनवा
रती ॥ कोमलकमलदलपलव
नहंसकेधोमवरन महोछकीस
जोरूराथीअरती ॥५९॥ नषवर्नन ॥
विधौमनवेधनवनाएहैविधि
नाहेदेषिदसदरपनसेनंदके
ललाहंसनकीगोलकाकिना
रतारिकाननुकेकमलदलनुप
परस्याललबूंदकेछला अंतरकी
आभाकरवीरकोरकाकीकोर
नलिभदनिरषिसिहातिनितही

हला॥ताका चारचंदमुषीतेरेनख
चंदनुबीकिधौकामकेलवनकी
किमालिचंदकीकला॥६०॥गति
वर्नन॥छबिनुकीछायासवसुष
दायामोहनीकीमायाकिधौका
यामनभायाहेअनंगकी॥चित
हूकीचातुरीकिआतुरीचरनहू
कीकातरीकपटप्रीतिवेरीसव
अंगकी॥वलिभद्रभागकीसुहा
गकीसहायककिप्रीतिकेउकी
लसषीजोवनकेसंगकी॥पिय
सुषदेनीइंदीवरनैनीतेरीगति
सारसमरालगजराजगतिभं
गकी॥६१॥अथसोरहसिंगार॥अ
लपअधरकटमुरवाअलपकेन
सुनतविसेषवैनवीनापिककी
रको॥सुभरकपोलघेरसुभरसुनर
उरसुभरनितंवनमेमोहेमनधीरके

२३ निर्मल दसन नैन मग वलि मड
मानौ फेन मैन सोहत है सुरसरी
के नीर के ॥ स्याम पाटी तार रोमरा
जी कुच अग्र कोर सो रह सिंगार रस
सुभायक सरीर के ॥ ६२ ॥ करि दंतधा
वन उवटने उवटि अंग मंजनु के
देह अंग छांनि अंग छायौ है ॥ करि
कै तिलक मैन पाटी पार वलि मड
भाल भली वंदन की विंदु कौ वना
ई है ॥ अंजन दै नैन देषि दर्पन चि
वुक चिह्नु अधर रत मोर की अधिक
छवि छाई है ॥ मिहदी करन रचाई औ
ई है महावर की सोरह सिंगारनु को
माल चतुराई है ॥ ६३ ॥ सोरह सिंग
रवारह आ...षन...ने...॥ वैनी
मांग भाल सुक नासिका के वलि
मड कंचन सो काच हू के वरनम
पारहे भुजन के मंडन पहूचे कर

पल्लवके कौनगनै उरवेजिमेहमे
लहारहे ॥ कटिमुरवाके करपाइकौ
अंगुरिनके बिछीया मुंद्रादिहैजि
नेकऊनकारहे ॥ चीरमनचातुर
सुगंधचारुफूलेकारवारहूभूषष
नएसोरह सिंगारहे ॥ ६४ ॥ देहवर्नन
पल्लकातै पाउयो धरति धनधरनी
मे छलि पेरपल माऊपेडेवेगमन
तै ॥ लीलेजात मोरत वस्त्रापेताप
वलिभइहोतिहै फूरचिपानपीव
अचवनतै ॥ हारहूकेभारफूरतन
हूकेचीरकेभारतातेनहीहोतिवा
माबाहिरीभवनतै ॥ लागेजोस
मीरतातेपरीपैरसौतिनुकेफूल
भोउडतलागेपंषाकीपवनतै ६५ ॥
इति वलिभद्रकृत सिषनष सं
पूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥ राम ॥ राम ॥

34

ॐ स्वस्ति प्रथमस्कंदे दे अवतार लिखे
प्रथम पुरुषावतार जिसदे नाभ कमल
ते ब्रह्मा उतपत होया सभनां अव
तारां दा बीज १ फिरी वराह अवतार
हिरन्याक्ष मारे पृथ्वी दा उधार की
ता २ नारदा अवतार वैस्नवतंत्र
आत्मज्ञान कीता ३ नर नाराय
णावतार धर्म रिषीश्वरे दे पुत्र मा
ता दा नाम मूर्ति प्रजा दे कुशलार्थ
बदरिकाश्रम तप करते ४ कपि
लदेव कर्दम ऋषि पिता देवहूति मा
ता सांख्य योग दा उपदेश माता की
कीता ५ दत्तात्रेय अत्रि ऋषि पिता
मा अनुसूया माता आत्मविद्या प्रह्लाद
क अलर्क नामे रिषीश्वरे को उपदेश
कीता ६ यज्ञावतार रुचि प्रजापति
नामा पिता आकूति नामा माता स्वयं

८

भूमन्दीरक्षाकरी ऋषभदेवपि
तेदानामनाभ मातारानाममेर
देवी परमहंसोंकीऽवस्थाल
हालनेवास्ते ८ राजापृथुप
थीदुहतीरत्नकाटे ९ मत्स्या
वतार वडीहोइकेंप्रलयदेज
लविषें वैवस्वतमनुएंदीरक्षा
करीसमयविनाप्रलयहुयाथा
१० कछावतार समुद्रमथन
११ धन्वंतरिअमृतेकीलैआया
१२ मोहनीहोकेंवंडेआअंमृत
१३ नरसिंहावतार हिरन्यकस
पुमार्याप्रहलादकीरक्षाकरी
१४ वामनवलछलन १५

परसराम होकैं छत्री मारे १६
व्यासदेव होयकैं शास्त्र वणाये १७
रामचंद्र होयकैं रावण मास्यो १८
वलभद्र होयकैं पृथ्वीभार उतारे १९
कृष्ण होयकैं भी पृथ्वीभार उतारे २०
जगन्नाथ होयकैं अस्वांदी बुद्धि
हरि २१ कल्की पापीयां की मारग
२२ अवतार दोय एकादशस्कंद
विलहाले हंसस्वरूप होयकें व्र
ह्म की आत्मज्ञान उपदेश कीना।
२३ सनकादिक होयकें ध्रुवराय
की परमहंसज्ञान उपदेश कीना
२४

35

संवत् १७०० श्रीराजाजगतसिंहपिठाणिआं पातसाहेसाहजहानैमाथआंकीहोयापात माहेदीआंफौजांराजेजगतसिंहैनपरआ वुआंतिकांदीगणतीलिखी॥ हाथी ७०० असवार १७०००० मनसवदार३०० सतस ही पंजसहदीतेसदीदुसदी पादेआंदीग णतीनही १ पातसाहमुरादवगससहजादा १ मीरसेदषांनजहां १ वहादरषांरुहेला १ सेदषांजफरजंग १ लोहरसषान १ रु समषां कंधारी १ । नजावतषां १ मुल तानषां १ मुकर्वषांदषणी १ कलीचषां १ षलीलषां १ अकवरअली १ वजीरवेग १ अलाविरदीषां १ काशिदासवगसी १ असा लतषांजफरजंग १ अवदुल्लाषांजषमी १ जुसफरषां १ दौलतषांकांगडेवाला १ नर मतषां १ रणमस्तषां १ सिरन्दाजषां १ जुलफकारषां १ सेदफरीद १ सुमानषां १ नसीरषां १ पिरोजषां १ वगसीसुलतान नजर १ मुकरवषांडआ ८१ षोजाअव दुलाहसनेंदासुत्र ● मसरषां १ सेषअवदुला



मीरखुजरुक १ पिठाणपहाड़षां १ षुसरवेग १ भीषणषां १ कर्मवषां १ ब्रह्मषां १ षोजा अवदुल्लारहीम १ सैदअबूवगसी १ राजा नजरवहादर १ राजाचंद्रमानकरोच १ राजा मानधाताकछोआहा १ राजाजसवंतसिंह रठोड १ राजाअमरसिंहरठोड १ राजारुपा राम १ राजाभाउसिंह १ राजावदनविदासिया १ राजाछत्रसालहाडा १ राजाचतुर्भुजचुहाण १ राजाअमरसिंहगोड १ राजाअनिरायदापुत्र १ राजारायसिंहवघेला १ राजाचिमना १ राजाजाहरसिंहसिसोदिया १ राजामाधोसिंहबुंदेला १ राजाभोपतलालवीरसिंहदापुत्र १ रायगवर्धनदासगोड १ राजामानसिंहगुलेरिया १ राजापृथीसिंहजम्वाल १ राजाइंद्रसिंहडिढोआल १ राजाभोपतचंदसिवहिया १ राजासिविचंदजसोआल १ राजाजसोआल

80